लड़कियों का खेल

2 3 3 41

लेखक

स्व० गिरिजाकुमार घोष

[लक्ष्मी, कमला-कुसुम, नारी-उपदेश आदि के रचयिता]

संपादक

स्व० प्रेमचंद

मुख्य वितरक—
प्रभात-पब्लिशिंग हाउस
नयागाँव, लखनऊ

प्रकाशक
जयतोष-प्रकाशन
लखनऊ

चतुर्थ संस्करण - १९६२
मूल्य - १.००

मुद्रक
समाज-सेवा प्रेस
सआदतगंज, लखनऊ

भूमिका

कन्याओं की शिक्षा के लिए बालकों की शिक्षा से कम नहीं, अधिक प्रयत्न होना चाहिए, क्योंकि ये ही भविष्य की माताएँ हैं। बालकों की भाँति कन्याओं में भी सेवा-व्रत, परोपकार, देश-प्रेम, विज्ञान-बोध, एकता आदि गुणों को उत्पन्न कर देना रक्षक तथा शिक्षक दोनों का परमकर्तव्य है। इसी कर्तव्य को पूरा करने के लिए स्वर्गवासी बाबू गिरिजाकुमारजी घोष ने यह 'लड़कियों का खेल' नामक पुस्तक लिखी है। यदि निर्दय काल समय से पहले उन्हें उठा न लेता, तो बालिका-विनोदिनी पुस्तक-पुस्तिकाओं से हिंदी-साहित्य की शोभा और बढ़ जाती। यह कहना न होगा कि हिंदी-साहित्य में बालिकाओं के लिए ऐसी अच्छी पुस्तिकाओं का बड़ा अभाव है! आशा है, कन्याएँ इस पुस्तक को पसंद और इसमें जो शिक्षाएँ दी गई हैं, उन्हें ग्रहण करेंगी।

इस पुस्तक के कई गीति-नाट्य (Action Songs) प्रयाग की गौरी-पाठशाला में सुकुमार-मति बालिकाओं ने इतनी अच्छी तरह खेले थे कि बहुतेरे दर्शक मुग्ध और भाव-विह्वल हो उठे थे। आशा है, दूसरी अनेक कन्या-पाठशालाओं की कन्याएँ तथा अध्यापिकाएँ इस पुस्तक से असीम लाभ उठाकर एक नवीन प्रणाली द्वारा देश-हित-व्रत के शुभानुष्ठान का कार्य आरंभ कर देंगी।

—प्रेमचंद

विषय-सूची

लड़कियों का खेल

भारत-माता

मुकुट-रूप में गिरिवर तेरे
　　सिर पर शोभा धारे।
वारिराज तेरे चरणों को
　　सुख से सदा पखारे॥
विंध्याचल कटिभूषण तेरा,
　　गंग कंठ की माल।
छः ऋतु तेरी पूजा के हित
　　फूल चुनें भर डाल॥
मलय चमर लेकर हाथों में
　　तुझ पर सदा डुलावे।
कमल-सरीखी लंका
　　तेरी शोभा खूब बढ़ावे॥

कोटि-कोटि संतति ले गोदी
प्रेम पयोधि पिलावे।
भूखे दाना, प्यासे पानी,
नंगे बसन दिलावे।
हे भारतमाता! यश तेरा
हम सब बहने गावें।
रूप-रासि, गुन-खानि, तुझे हम
सादर सीस नवावें।

झूला

[दो कन्याएँ गाती हैं]

श्यामा—झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
यह पानी कित जावे री?
रामा— आधा पानी नदी जावे,
आधा भूमि समावे री।
श्यामा—झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
नदी से कित जावे री?
रामा—नदी में से बहता-बहता
बीच समंदर धावे री।

श्यामा— ताल, तलैया, नाले देखे,
गंगा नदी नहाई री।



कहो, समंदर कैसा होवे ?
नहीं समंदर न्हाई री।

रामा—ओर-छोर नहिं देख पड़े, बस
पानी-पानी जाने री ।
जित देखो, तित पानी-पानी
वही समंदर माने री ।
श्यामा—झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे
नदी समंदर धावे री ।
कहु बहिनी, कित होय समंदर,
कैसे देखा जावे री ?
रामा—भारत में तू रहती बहिनी,
उसके तीनों ओर री ।
फैला है वह बड़ा समंदर,
देखो जा उस छोर री ॥
कलकत्ता, बंबई चलो री,
चलो द्वारका ओर री ।
देश उड़ीसा, जगन्नाथजी,
बसें समंदर-छोर री ॥
श्यामा—झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
पानी कित ते आवे री ?
रामा—बदरा में से पानी बरसे,
देख नहीं क्या पावे री ?

श्यामा—ये बदरा कित पावें पानी,
कहो हमें समझाई री।
रामा—बदरा हैं पानी की बूँदें,
लाखों बूँद जमाई री॥
श्यामा—बदरा हैं पानी की बूँदें?
कित तें बूँदें आवें री!
रामा—धरती ही से बूँद चढ़े हैं,
आसमान को धावें री॥
श्यामा—झिमझिम-झिमझिम बूँदें बरसें,
कैसे चढ़ें अकासा री?
कहो सखी, मैं यह ना जानूँ,
बदरा करें तमासा री॥
रामा—सुनो सखी, तुम ध्यान लगाकर
पानी जैसे बनता री।
धरती ही से चढ़कर पानी,
आसमान से गिरता री॥
खुदबुद-खुदबुद पानी खौले
हँड़िया में चूल्हे पर री।
पानी का फिर धुँआ बने जो,
उड़ता जावे ऊपर री॥

ऐसे ही तुम जानो बहिना,
　　पानी धूप तपावे री।
सूखें नदी, ताल, समंदर,
　　पानी सब उड़ जावे री॥

पानी सब उड़ जावे री, फिर
　　धुँआ भाप बन जावे री।
वही भाप जब चढ़े अकासा,
　　बादर बन-बन धावे री॥

वे बादर सब बटुरें, भारी
　　होके नीचे बरसें री।
झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
　　हृदय हमारे हरषें री॥

बहता पानी भरे समदर,
　　नदी, ताल, सरोवर री।
भाप बने, ऊपर उड़ जावे,
　　लौटे वही बरोबर री॥
झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
　　घर का पानी घर में री।
दाना उपजे, खावे परजा,
　　हुकम दिया ईश्वर ने री॥

सूरज उगता, जगत सुखाता,
पानी फिर बरसाता री ।
ऐसे ही किरपाल विधाता,
हमको अन्न दिलाता री ॥

तीनो मिलकर—

हाथ जोरके बिनती करिए,
दया करो किरपाल हरी ।
झिमझिम-झिमझिम पानी बरसे,
गुण गावें हम आठ घरी ॥

———

जुलाहे की बेटी

एक जुलाहिन की बेटी थी
झाड़ू देती आँगन में ।
और सोचती जाती थी वह
इस प्रकार अपने मन में—
माता - पिता, सभी नाते के
इसी गाँव में रहते हैं ।
अगले फागुन में सब मेरा
ब्याह कराने कहते हैं ॥

इसी गाँव में मैं भी रहती
व्याह यहीं होता मेरा ।
सब कोई हिल-मिलकर रहतीं,
सुख से दिन कटता मेरा ॥
अम्मा-बप्पा, सबसे मिलती,
सुख से सदा रहा करती ।
इनसे कभी अलग रहने का
दुःख नहीं मैं सह सकती ॥
ऐसा सोच-सोचकर दिल में
हुई छोकरी बड़ी मगन ।
किंतु दूसरी बात सोचकर
भरी उदासी उसके मन—
हाय ! कहीं जो बेटा मेरा
मर जावे होते-होते ।
बप्पा-अम्मा, नाते वाले,
मर जावें रोते-रोते ॥
तब तो हाय-हाय ही करते,
छाती पीट मरूँगी मैं ।
हाय करम कैसे जीऊँगी !
कैसे दुःख सहूँगी मैं !

रख दी झाड़ू एक ओर तब
लगा भीत से उसी घड़ी।
और लगी रोने-चिल्लाने
धरती पर वह पड़ी-पड़ी॥
घर की सभी औरतों ने जब
उसको रोते देख लिया।
उन सबने भी संग उसी के
रोना-धोना शुरू किया॥
जुलहिन सब रोती जब देखीं,
जुलहे भी दौड़े आए।
छाती पीटी, माथा कूटा,
हाय-हाय कर चिल्लाए॥
बप्पा रोवे, बच्चा रोवे,
भाई-बहन, सभी घर के।
कोई न पूछे कारण असली,
रोवें धाड़ मार करके॥
चिल्लाहट औ हाय-हाय सुन
दौड़ पड़े टोले के लोग।
पूछें वे जुलहों से, भाई,
कौन बिपत का आया जोग॥



जुलाहे बोले—हम क्या जानें,
रोती हैं सब औरत जात।

कहे जुलाहिन—हम क्या जानें,
जानें यही छोकरी बात ।
कह री छोरी, क्यों रोती है ?
पूछा सबने, तब बोली—
एक बात ने मेरे मन में
मार अचानक दी गोली—
इसी गाँव में ब्याह हमार
कहीं एक दिन हो जाता ।
होता पैदा पूत, उसी छिन
किंतु सदा को सो जाता ॥
तो फिर बप्पा-अम्मा सारे
इसी तरह से रोवेंगे ।
यही सोचकर रोती हूँ मैं,
दुखी सभी वे होवेंगे ॥
सुनी बात ऐसी तब जितने
बटुर गए थे नर-नारी,
उन सबकी बस ज़ोर-ज़ोर से
हँसने की आई पारी ॥

मैं न करूँगी

लोटा भरकर पानी लैयो,
और कोई जाकर लावे ।



पोथी को तो पढ़ लीजो री,
मुझे बाँचना नहिं आवे ॥

चिट्ठी को लिख दीजो रानी,
कोई दूसरा लिख जावे।
कोई काम भी करने कहिए,
मुझको तो नहिं कर आवे।
लड्डू खावेगी री? हाँ जी,
यह लो देखो, मैं आई।
टोपी को तो सी लीजो री,
नहीं सिलाई हो भाई?
काम-काज करने में नाहीं,
लड्डू लेने क्यों धावे?
लड्डू भी अब देखो लालो,
कोई दूसरा ले जावे॥
पढ़ती-लिखती, काम सीखती,
रानी वही हमारी है।
चतुर सयानी सब कुछ पाती,
होती घर की प्यारी है॥

मंडूक-सभा

(बड़ी कन्याओं के लिये)

बरसात आ गई। सोहबतिया तालाब के कि
मेंढकों ने मिलकर रागिनी अलापना शुरू कर
नई ऋतु, नया पानी देखकर मेंढक लोग आन
उछलने-कूदने और गाने-बजाने लगे। पर कुछ
ने, जो देश-भक्त थे और अपनी जाति के सुधा
लिये रात-दिन सोच में लगे रहते थे, तालाब के
किनारे एक दिन बड़ी भारी सभा की। दूर-दू
झील-तालों के बड़े-बड़े पेटवाले मेंढक फुदक-फुदक
सभा में आ-आ कर कुरसियों पर बैठने लगे। जब
के सब सभासद् बैठ गए, तब एक जवान मेंढ
अपनी नाक पर सोने का चश्मा चढ़ाकर बड़े
से खड़े होकर कहा—"आज की सभा के लिये
कायंकोंयजी को अपना सभापति बनाना चाहते
कायंकोंय महाशय विद्या में, बुद्धि में, साहस में,
में, देश-भक्ति में, जाति के हित में, सब बातें
हमारे बड़े हैं। इसलिये हमारी राय में सब भाई
लोग आज कायंकोंयजी ही को स

के आसन पर बैठावें। इस पर बड़े जोर से तालियाँ बजने लगीं। "मंजूर, मंजूर" करके सब मेंढक चिल्ला उठे। बस, कायंकोंयजी अपनी तोंद फुलाकर, गरदन खड़ी करके, सभापति की कुरसी पर जा बैठे।

तब सभापति की आज्ञा से गटरगों नाम के एक विद्वान् मंडूक महाशय खड़े होकर लेक्चर देने लगे। गटरगोंजी ने कहा—

"माननीय सभापति महाशय, सब सभ्य मंडूक और मंडूकनियों! मनुष्य लोग हमसे घिन करते हैं। इसका सबब यही है कि वे हमारी खबर बहुत कम रखते हैं। इसलिये हम उनको समझाना चाहते हैं कि हम संसार में कोई छोटी या बुरी जाति नहीं हैं।

देखिए, हम लोग अंडज जीव हैं, यानी हमारा जन्म अंडे से होता है, पर हमारा मेल किसी अंडज जीव से नहीं है। बरसात लगते ही जब गड्ढे, नाले, झील, ताल पानी से भर जाते हैं, उस समय हमारी माँ आकर अंडे देने लगती है। उसी से हम लोग जन्म लेते हैं। तेरह-चौदह सौ भाई-बहन का जन्म एकसाथ मां के पेट से होता है। इतनी बात सुनकर जो हमको

मछली की जाति कहेंगे, उनको हम यही कहेंगे
भूल करते हैं।

बचपन में हमको कोई देखे, तो मेंढक
जाति का कभी नहीं समझ सकता। तब
साँप की तरह लंबी-सी पूँछ भर रहती है।
दिनों में सामने के दोनों हाथ निकलते हैं।
दोनों पैर भी निकलते हैं और पूँछ टू
गिर जाती है। आदमी हमको रेंगने
जीव कहते हैं। पर नहीं, हम जानते हैं
भी हमको साँप की जाति नहीं कहेंगे
हम पैदा होते ही मछली की तरह कनफड़ों
साँस लेते हैं। पर हाथ-पैर निकलने पर ह
कनफड़ों के छेद बंद हो जाते हैं, और फे
बन जाता है। तब हम आदमी की तरह फेफड़े
साँस लिया करते हैं। बड़े होते ही हम कुद
मारने लगते हैं। तब हम जल-थल, जहाँ खुशी
वहीं रह सकते हैं। थलवाले जीव घड़ी भर जल
रहें, तो मर जावें और जलवाले जानवर भी थल
तड़प-तड़प कर प्राण दे दें। पर हम जलचर-थल
दोनों हैं। इसलिये हम उभचर हैं।

हमारी ताक़त कम नहीं है। जितना बड़ा हमारा बदन है, भगवान् ने उससे पचासगुनी ज्यादा ताक़त हमको दी है। एक कुदक्के में हम कहीं-से-कहीं पहुँच सकते हैं। इसलिये कोई हमको दुर्बल न समझे।

(ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजती हैं।)

जाड़ों में हम पानी से हटकर गर्म बिलों के भीतर चले जाते हैं। जाड़े-भर आराम में पड़े सोकर ही काट देते हैं। खाने-पीने की सुध हमको नहीं रहती। फिर बसंत की बयार चलते ही हम धीरे-धीरे बाहर निकल आते हैं। पर आदमी हमको आलसी कहकर गाली देने से नहीं चूकते।

विज्ञान-शास्त्र में हमने बड़ी तरक्क़ी कर ली है। देखिए, आसमान का रंग देखते ही हम पहले से पानी बरसने का समाचार बता सकते हैं। अपनी प्यारी बरसात की आमद जानते ही हम राग-रागिनियाँ अलाप कर गाने लगते हैं। आदमी इसी काम के लिये बारोमीटर नाम की कल बनाकर काम में लाते हैं। हमको इस छल-बल की क्या ज़रूरत?

और देखिए, दुनिया का कोई भी जीव हमारी तरह बहुत दिन तक बिना खाए-पिए नहीं जी सकता। हम

न मिले, तो कोई पल-भर भी नहीं ठहर सकता
हम लोग बिना अन्न के, बिना पानी के, और
हवा के भी बरसों बिता देते हैं।

(बड़े जोर से आनंद की आवाज़ होती है।)

हमारी बात को कोई झूठ न समझे। एक
छेद के पत्थर को तो कर उसके भीतर मेढकी
बैठी देखकर आदमी अचरज मानते हैं। पर वे
बेवकूफ़ हैं। वे नहीं जानते कि हमीं में से कोई
एक दिन एक पत्थर की दरार में पड़कर सोने
कई वर्ष बीत गए, पर उसकी नींद न टूटी। उधर
वान् का नियम यही है कि पत्थर भी सदा
रहता है। बढ़ते-बढ़ते पत्थर मेढकी के निकलने
द्वार बंद कर चुका। वह मेढकी उसी के भीतर
गई, पर उसे खाने-पीने या हवा की ज़रूरत
हुई। यही भगवान् की लीला है।

पर आदमी इस बात से निश्चित कब होने
एक साहब ने कुछ मेंढकों को पकड़कर एक पत्थ
छेद में भर दिया। ऊपर से काँच लगाकर पत्थ
सूराख बंद कर दिया। फिर चूने से उसे औ
पक्का कर दिया। इसके बाद पत्थर को धर

भीतर माड़ दिया। साल-भर पीछे खोदकर देखा, तो सब मेंढकों को जीता-जागता पाया।

दुनिया में आदमी के बराबर नमकहराम जाति और दूसरी नहीं है। हमसे उसको कितनी शिक्षा, कितनी भलाई मिल रही है, पर वह हमारा गुण नहीं मानता। कीड़े, मकोड़े, केंचुए, चींटियाँ ये सब आदमी का कितना नुक़सान करते हैं। हम उनको खाकर आदमी का भला करते हैं। पर आदमी हमको इसका बदला कैसे देता है, जानते हो? आजकल योरप के सभ्य लोग हमारा मांस खाने लगे हैं, और अब हिंदुस्तान में भी तो बहुत लोग साहब बनने लग गए। हमको डर है कि अब हिंदुस्तानी साहब भी मेंढक का मुरब्बा उड़ाने न लग जावें। हमारे चमड़े से साहब लोग सुन्दर-सुन्दर दस्ताने बनाते हैं। किताब पर जिल्द बाँधते हैं। बाजों में भी हमारा ही चमड़ा लगाते हैं। अब कहिए तो, हम न होते, तो आज सभ्य बननेवाले आदमियों की क्या दशा होती?

(थपेड़ियाँ बजती हैं)

हम तो आदमी का इतना भला करते हैं, पर पानी बरस जाने पर जब हम लोग आनंद से मस्त होकर

कें-कों, गटर-गों भक्-भक्-भो करके गीत गाते
उन्हें अच्छा नहीं लगता।"

इसके बाद कटरकट नाम के मेंढ़क ने खड़े
कहा—"ये आदमी लोग बड़े दुष्ट हैं। न-मालूम
ये लोग हमसे घिन करते हैं। जब देखो, तब
प्राण लेने को तैयार रहते हैं। आप सब लोगों क
हो, तो हम लोग मिलकर ज़हर उगलना शुरू क
जिससे सारा संसार जल जावे।"

तब सभापति महाशय ने खड़े होकर कहा—"
बहुत देर हो गई है, इसलिए सभा यहीं पर बं
दी जाय, और आज की सभा की एक रिपोर्ट 'कु
दर्पण' के संपादक के पास भेज दी जावे, जिससे
छोटी लड़कियाँ और उनके भाई लड़के लोग उसे प
अभी से हमारे बारे में सावधान हो जावें।"

फिर सभापति महाशय को धन्यवाद देकर
भंग हो गई।

तीन सखियाँ

(पाठशाला में इनाम बाँटने के दिन आवृत्ति के लिये)

सुशीला—क्यों विमला, तू कहाँ चली है,
झटपट होके आज तैयार ?
सुंदर - सुंदर गहने - कपड़े
पहने तूने लच्छेदार !
कमला—अच्छी बात सुशीला, तूने
याद दिलाई मौके पर ।
मुझको भी शाला जाना है
सबके साथ अभी सजकर ।
विमला—वर्ष - परीक्षा के फल सबको
वहाँ सुनाए जावेंगे ।
सुशीला—गहने लाद लिए जो इतने
कुछ भी काम न आवेंगे ।
विमला—बहन, अकेली मैंने ही तो
धारण किए नहीं गहने ;
सभी बालिकाओं ने सुन्दर
वस्त्राभूषण हैं पहने ।
बारह मास परिश्रम करके
विद्या सीखी है सबने ;

आज उसी का फल पावेंगी,
इसी लिये पहने गहने ।
नंगी-बूची वहाँ अकेली
मैं ही फिर जाऊँ कैसे ?
अपने मन की बात बता दे,
तू क्यों चलती है ऐसे ?

सुशीला—सुनो सखी, झूठे गहनों से
निज मन को मत भरमाओ ;
विद्या ही सच्चा गहना है,
उसे परिश्रम से पाओ ।
धारण करो हृदय पर सजनी,
सत्य-रतन जो है अनमोल ;
फिर पहनो सद्गुण-मणि-माला
और कंठ में मीठे बोल ।
सेवा-शुश्रूषा के कंकण
पहन सजाओ दोनो हाथ ;
परहित, क्षमा, सांत्वना-भूषण
पहनो शुद्ध शील के साथ ।
सच्ची सुन्दरता को सचमुच
गहने हैं बेकार सखी !
गुण-आभूषण परम दिव्य हैं,
सोना तो है भार सखी !

कमला—कही ज्ञान की बातें तूने
अति सुन्दर, अति हितकारी;
सबको भूषित करनेवाली
पैठ गई मन में प्यारी !
समझ गई, हो गइ चित्त में
बात यही अब समुदित है—
इस सज-धज, इस ठाट-बाट से
शाला जाना अनुचित है ।
कहीं परीक्षा का फल उलटा
निकला, तो लज्जा होगी;
मुँह भी दिखलाया न जायगा,
शूल यही सज्जा होगी !
विमला—विद्या में भी चित्त लगाऊँ,
आभूषण भी धारूँ मैं ।
बाहर-भीतर करूँ विभूषित
ऐसे देह सँवारूँ मैं ।
उभय प्रकार—अलंकारों से
रखती हूँ मैं प्रेम समान ;
कहो सखी, शिक्षा के गुण अब
मैं सुनती हूँ धर कर ध्यान ।

सुशीला—विद्या से सधते हैं कारज़
और धर्म होता है पुष्ट ;
विद्या से जन, विद्या से धन,
विद्या से मन होता तुष्ट ।
विद्या देती विनय बड़ाई,
बिन विद्या नर हैं बंदर ।
विद्या से नभ में उड़ते हैं,
चलते हैं जल के अन्दर !
कमला—विद्या से है ज्ञान, ज्ञान से—
धर्म, धर्म है सुख का सार ;
यही नहीं, विद्या देती है—
लोक और परलोक सुधार ।
ऐसी विद्या के हित बहनों,
जतन करो दिन-रात सभी,
बिना जतन के रतन न मिलता
मत भूलो यह बात कभी ।
सुशीला—ज़ितने धन हैं, सभी धनों में
विद्या धन है परम प्रधान,
इसे न चोर चुरा सकता है,
छीन न सकता भूप महान ।

भाई भाग नहीं ले सकता,
नहीं रोकता है यह ठौर ;
व्यय करने से नित बढ़ता है,
ऐसा धन क्या है कुछ और ?
विमला—क्या होगा विद्या पढ़ने से ?
सुधरेगी क्या अपनी चाल ?
पढ़ो ज्ञानमाला - विद्यांकुर,
ज्ञान नहीं होगा तत्काल ।
गोलमोल भूगोल पढ़ो या
अंकगणित भी सब सीखो ;
बसो कैदखाने परदे में,
बैठ करम को फिर झीखो !
क्या कर लोगी काढ़ कसीदा,
कौन मोल उसको लेगा ?
घर का धंधा, गंदा होगा,
कर मैले वह कर देगा !
कौन रसोई तपा करेगा,
धुआँ आँख में जावेगा !
सीता और द्रौपदी का वह
भाव न हमको भावेगा ।

हारमोनियम पर हम गाकर—
फूहड़ गीत न ऊबेंगी।
पढ़कर उपन्यास गंदे सब,
पाप-पंक में डूबेंगी।
इस शिक्षा से लाभ नहीं सखि,
हम घमंड से ऐंठेंगी।
घरवालों से ज़रा - ज़रा - सी
बातों पर लड़ बैठेंगी।

सुशीला—कही सखी विमला, जो तूने
बातें बिलकुल सच्ची हैं।
अधकचरी शिक्षा से तो हम
रह जाती बस, कच्ची हैं,
शिक्षा नहीं, कुशिक्षा है वह
जिससे धर्म नष्ट हो जाए—
लज्जा, शील-सनेह छूटकर—
कुल की मर्यादा खो जाए।
हाथ जोड़ लो उस शिक्षा को
हमें निकम्मा जो कर दे—
और हमारे बाल्य हृदय में
अवगुण-ही-अवगुण भर दे!

शिक्षा ऐसी पाओ बहनो,
मिले सुकीर्ति-मान जिससे ;
मात-पिता, गुरुजन परिजन का
हमको रहे ध्यान जिससे ।
आलस, अविनय, ऐंठ, अवज्ञा,
हिंसा, झूठ, कपट, पाखंड,
दूर सदा इन सब दोषों से
रहने का हो हमें घमंड ।
ध्यान धरो उन परम पिता का,
निर्बल के बल हैं भगवान,
वही दयामय दया करेंगे,
हर लेंगे सारा अज्ञान ।

कमला—सखी सुशीला, तेरी बातें
सुनकर हुआ बड़ा आनंद ;
बिना पढ़ी लड़कियाँ जगत में
कहलाती हैं अति मतिमंद ।
इसमें कुछ संदेह नहीं है,
किंतु यही है मेरी राय—
कोरा पढ़ना ही उन्नति का
हो सकता है नहीं उपाय ।

पढ़-लिखकर भी सीख सकीं हम
यदि न गृहस्थी का कुछ काम,
तो सच मानो, नहीं मिलेगा
हमें कभी घर में आराम।
घर की बड़ी-बूढ़ियों से हम
सीखें काम-काज करना—
सभी गृहस्थी की चीज़ों को
ठीक क़ायदे से धरना।
नाना विधि पकवान-रसोई—
दाल-भात, फुलके बेदाग,
पापड़, पूड़ी और कचौड़ी,
कढ़ी-पकौड़ी, भाजी-साग।
मधुर मुरब्बे, चोखी चटनी,
रुचिर रायते बना सकें,
ऐसा हो अभ्यास कि चाहे—
जितना करके भी न थकें।

सुशीला—कमला बहन, सुनो, मैं तो सब
थोड़ा-थोड़ा करती हूँ,
छोटा कलसा-रस्सी लेकर
नीर कुँए से भरती हूँ।

मुन्ना को नहलाकर फिर मैं
नहलाती हूँ मुन्नी को ;
स्वयं नहा - धोकर आगे का
पाठ पढ़ाती चुन्नी को ।
माताजी के साथ रसोई
फिर करने जाती हूँ मैं ।
तब भोजन करके पढ़ने को
शाला में आती हूँ मैं ।
शाला से छुट्टी मिलने पर
जाती हूँ सीधी घर ही ;
करके व्यर्थ विलंब मार्ग में
रुकती नहीं कहीं पर भी ।
घर जाकर मुन्ना - मुन्नी को
थोड़ी देर खिलाती हूँ ;
फिर चुन्नी को पास बिठाकर
सीती और सिलाती हूँ ।
सूती मोजे और ऊन के—
गुलूबंद भी बुनती हूँ ।
कभी-कभी प्राचीन कथाएँ
माताजी से सुनती हूँ ।

विमला—बहन सुशीला, मैंने भी तो
पंखा एक बनाया था ;
बहुत पसंद बड़े भैया को
मेरा पंखा आया था ।
मोजे - गुलूबंद बुन लेना
याद नहीं है पर मुझको ,
सुशीला—उसमें क्या है, सिखला दूँगी
चार रोज में मैं तुझको ,
अच्छा चलो, चलें अब सखियों
समय हो गया शाला का ;
होना है व्याख्यान आज फिर
विदुषी श्री विधुबाला का ।
कमला—हम तीनो सखियों का कैसा
अच्छा हुआ आज संवाद ;
आशा करती हूँ ये बातें
सदा रहेंगी हमको याद ।
सुशीला—इसमें क्या संदेह ? करें हम
आओ जगत्पिता का ध्यान ;
देंगे हमको वही दयामय
विद्या - बुद्धि और सम्मान ।

तीनो—(हाथ जोड़कर)

जय-जय परमपिता, परमेश्वर,
जय-जय दयानिधान प्रभो !
दीजे सत्य, शील, शुभ सद्गुण,
विद्या का वरदान प्रभो !

(प्रणाम करती हैं ।)

वे कहाँ ?

रम्मो—श्री गुरुआनीजी महाराज,
एक बात बतला दो आज ;
गुरु०—पूछो रम्मो, तो बतलाऊँ,
अच्छी तरह तुम्हें समझाऊँ ।
रम्मो—भजता है जिनको संसार,
कहलाते जो जगदाधार ;
वे भगवन कहाँ रहते हैं ?
गुरु०—उन्हें सर्वव्यापक कहते हैं ।
सुनो सर्वव्यापक का अर्थ,
'सबमें व्यापक, स्वयं समर्थ ;
घट - घट - वास'. अंतर्यामी,
जगदीश्वर हैं उसके स्वामी ।

कहाँ बताऊँ अब मैं और ?
वे सर्वेश्वर हैं सब ठौर,
रम्मो—मान लूँ कि वे सभी कहीं हैं,
किंतु दीखते कभी नहीं हैं।
होता है फिर कैसे ज्ञान—
कि हैं सर्वव्यापक भगवान ?
गुरु०—भेद तुम्हें बतलाती हूँ मैं,
थोड़े में समझाती हूँ मैं,
बतलाओ, है रम्मो कहाँ ?
रम्मो—सम्मुख यहीं खड़ी मैं यहाँ।
(छाती पर हाथ रख लेती
गुरु०—यह तो रम्मो की छाती है,
(रम्मो सिर पर हाथ रखती
गुरु०—अब रम्मो सिर दिखलाती है !
(रम्मो हाथ बढ़ाती
गुरु०—यह तो है रम्मो का हाथ !
बोलो शीघ्र प्रश्न के साथ।
बतलाओ है रम्मो कहाँ ?
रम्मो—(पैर पटककर)
सम्मुख यहीं खड़ी मैं यहाँ !

गुरु०—क्या धरती से है कुछ वैर ?
रम्मो पटक रही है पैर !
रम्मो—ओ हो, ओ हो, मैं समझी अब,
ये शरीर के हिस्से हैं सब ।
मिलकर ही ये अंग अनेक,
बन जाती है 'रम्मो' एक !
गुरु०—कहती हो तुम 'रम्मो' जिसको,
कहो देह रम्मो की इसको ।
रम्मो—पर मैं नहीं देह से भिन्न,
गुरु०—समझो ज़रा, न होओ खिन्न ;
रहता यथा गेह में गेही,
रहता तथा देह में देही ।
होकर भी अभिन्न, है भिन्न,
देह छिन्न, वह किंतु अछिन्न ।
रम्मो—यद्यपि आपने है समझाया,
पर न समझ में कुछ भी आया !
गुरु०—अच्छा, तो फिर समझो वही,
रम्मो—हाँ, यह मेरी देह रही;
अभी आपने यही कहा है ।
गुरु०—कौन देह में बोल रहा है,
बतलाओ तो मुझे सयानो ?

रम्मो—कहते उसे 'बोलता प्रानी';
गुरु०—बोलो, वह कैसा है? और—
कैसे रहता है, किस ठौर?
रम्मो—कैसा है, बतलाऊँ कैसे?
नहीं दीखता है वह ऐसे!
यही देह है उसका गेह,
इसमें नहीं किंतु संदेह।
गुरु०—व्याप्त देह में सभी कहीं है,
किंतु दीखता कभी नहीं है।
रम्मो—हाँ-हाँ, मैं कहती थी यही,
गुरु०—तो अब समझो बात वही;
जीव अदृश्य देह में जैसे,
जगदीश्वर हैं व्यापक वैसे।
जीव-देह का जैसा मेल—
वैसा पुरुष-प्रकृति का खेल;
विश्वप्राण परमेश्वर मानों,
सबमें व्यापक उनको जानों।
सब जीवों पर रक्खो प्रेम,
चाहो सबका कुशल-क्षेम;

यही भक्ति है परमेश्वर की,
सबमें सत्ता है प्रभुवर की।

रम्मो—आज हो गई शंका दूर,
सुख पाया मैंने भरपूर ;
परमेश्वर को जान गई मैं,
सब में व्यापक मान गई मैं।
हैं जगदीश दया के धाम,
करती हूँ मैं उन्हें प्रणाम।
(हाथ जोड़कर प्रणाम करती है।)
सबमें व्यापक सत्ता उनकी,
है सर्वत्र महत्ता उनकी।

रेल का खेल

(इलाहाबाद से कलकत्ते तक का भौगोलिक नाटक)

एक गोल चक्कर में ६ लड़कियाँ रेलगाड़ी बनाकर दौड़ेंगी। पहली लड़की इंजिन और बाकी पाँच गाड़ियाँ होंगी। पहली लड़की सबसे बड़ी होगी, फिर क्रम से छोटी-छोटी। नं० ६ वाली लड़की सबसे छोटी रहेगी। सबके बाल एक ही ढंग के गुँधे हुए रहें या लंबी चोटियाँ पीठ पर लटकती हुई रहें। सबकी साड़ियाँ

कंधों पर से घुमाकर कमर से कसी हुई रहेंगी
लड़कियाँ उस गोल चक्कर के बीच में खड़ी रहेंगी। इनमें
स्टेशन मास्टर, दूसरी घंटी बजानेवाली होगी। ये दोनो भं
चक्कर में घूमती हुई, रेल के ठहरने वाले हर स्टेशन पर
करेंगी। उसी चक्कर में स्टेशनों के निशान बने हुए होंगे
खेल आठ लड़कियों का है, पर कहीं-कहीं दो-चार और लड़
की भी जरूरत होगी, जैसे साग-पूड़ी बेचनेवाली आदि

लड़कियों का विवरण नंबरवार

१. इंजन—पोशाक काली साड़ी और कुर्ती।
२. से ६. रेल के डिब्बे—लाल साड़ियाँ और कुर्तियाँ।
७. घंटी बजानेवाली—पीली साड़ी-कुर्ती।
८. स्टेशन मास्टर—हरी साड़ी-कुर्ती। दोनो हाथों में दो भं
एक लाल और दूसरी हरी।

१—कू ऊ ऊ ऊ भक् भक् भक् भक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, छक् छक्।

(चल देती है

६—(सीटी)

७—(लाल झंडी हिलाती है।)

२—देखो, देखो, झंडी लाल!
ठहरो, ठहरो, रोको चाल।

(रुक जाती है।)

१—क्या यह इस्टेशन है याद ?
कहते इसे हम इलाहाबाद ।
यहाँ पेट में पानी भर लूँ,
और कोयला भी कुछ धर लूँ ।
जिससे आग धधकती है,
पानी भाप भभकती है ।
गरम भाप देती है धक्का,
चक्कर खाता है तब चक्का ।

७—(घंटी बजाती है ।)

८—घंटी हुई, मुसाफिर सब—
होशियार हो जाओ अब ।

(हरी झंडी दिखाती है ।)

२—देखो, झंडी हरी दिखाई,
अब तो गाड़ी छोड़ो भाई !

६—(सीटी बजाती है ।)

१—कू ऊ ऊ ऊ, भक् भक् भक् भक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, छक् छक् ।

(चल देती है ।)

२—पुल आ पहुँचा, करो ख़याल,
धीमी अब कुछ कर दो चाल ।

(धीमी चाल)

वह जमुना बहती आती है,
जो गंगा में मिल जाती है।
गुप्त सरस्वति है शुभ-देनी,
तीनो मिलकर हुई त्रिबेनी।

१—पार किया पुल, भक् भक् भक् भक् ,
कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक् ।
(तेज चाल

३—टोंस फोंस नदियाँ, नाले जो—
मिले, पार कर सब डाले सो।
गाँव-साँव इस्टेशन छोटे,
जिन पर बाबू दुबले मोटे;
छोड़ चली सबको यह रेल,
कहलाती है इससे मेल।

१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।

२—भक् भक् चला भाप का घोड़ा,
विंध्याचल को पीछे छोड़ा।

८—(लाल झंडी दिखाकर)
मिर्ज़ापुर है नगर पुराना,
यहाँ रेलगाड़ी ठहराना।

२—देखो, देखो, झंडी लाल !
ठहरो, ठहरो रोको चाल।
(रुक जाती है।)
३—गंगा तट पै मिर्ज़ापूर,
बर्तन बनते हैं मशहूर।
७----(घंटी बजाती है।)
८----(हरी झंडी)
घंटी हुई मुसाफिर सब----
होशियार हो जाओ अब।
६----(सीटी)
१----कू ऊ ऊ ऊ, भक् भक् भक् भक् ,
कलकत्ते को जाती हूँ, छक् छक् ।
(चल देती है।)
१----झड़झड़, तड़तड़, गड़गड़, गम्,
चलती गाड़ी--भम् भम् भम् ।
यह चुनारगढ़ छूटा जाय,
वह लो, आया मुगलसराय।
८----(लाल झंडी)
२----देखो, देखो, झंडी लाल,
६—ठहरो, ठहरो, रोको चाल।
(रुक जाती है।)

काशी के जानेवाले सब,
गाड़ी यहाँ बदल डालें अब ;
दक्खिन गया-लैन कहलाती,
कलकत्ते को सीधी जाती।

(बाहर से)

एक लड़की—
ताज़ा पूरी और मिठाई,
दूसरी—
बीड़ी सिगरेट,
तीसरी— बरफ्फ मलाई,
चौथी—
सालन - रोटी, गरम कबाब,
पाँचवीं—
बने खिलोने कि लाजबाब।

७—(घंटी)
८—घंटी हुई, मुसाफिर सब—
होशियार हो जाओ अब।
९—(सीटी)
१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।

(चल देती है।)

३—ये इस्टेशन क्या थोड़े हैं,
बिना रुके ही जो छोड़े हैं ?
वाह ! खूब इंजन दौड़ाया !
लो, दिल्दारनगर अब आया ।

८—(लाल झंडी)

२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो, रोको चाल ।
(रुक जाती है ।)
यह उत्तर को जाती लैन,
जरा दूर गाजीपुर है न ?

७—(घंटी)

८—घंटी हुई मुसाफिर सब—
होशियार हो जाओ अब ।

६—(सीटी)

१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक् ।
(चल देती है ।)

३—छूट गया उत्तर प्रदेश,
बदल गया भाषा - भेष !
चौसा छूटा, लगा बिहार,
देखो दोनो ओर निहार ।

४—हम तो सीधी चली चलेंगी,
बक्सर जाकर तब दम लेंगी।

८—(लाल झंडी)

२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो, रोको चाल।
आ पहुँचा बक्सर इस्टेशन,
पहले था इस जगह बड़ा वन;
यहाँ राम-लछमन आए थे,
विश्वामित्र उन्हें लाये थे।
थी बस, यहीं ताड़का मारी,
फिर निशिचर-सेना संहारी;
रामायण में कथा कही है,
देखो तो यह भूमि वही है।

७—(घंटी)

८—घंटी हुई, मुसाफिर सब—
होशियार हो जाओ अब।

६—(सीटी)

१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।
(चल देती है।)

३—देखो, यह नगरी है आरा,
आगे सोन नदी की धारा;
दक्खिन से उत्तर आती है,
फिर गंगा में मिल जाती है।

२—पुल आ पहुँचा करो ख़याल,
अब कुछ धीमी कर दो चाल।
(चाल धीमी हो जाती है।)

४—चौड़ा बहुत सोन का पाट,
इससे भारी पुल का ठाट;

१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।
(चाल तेज़ हो जाती है।)

८—(लाल झंडी)

२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो. रोको चाल।
(रुक जाती है।)

६—गंगा तट पटना प्राचीन,
इसमें हैं इस्टेशन तीन;
दानापुर, बाँकीपुर, पटना,
तीनो जगह हमें है डटना।

१—यहाँ पेट में पानी भर लूँ,
और कोयला भी कुछ धर लूँ;
आगे पर्वत और सघन बन,
है अब दूर बड़ा इस्टेशन।
७—(घंटी)
८—घंटी हुई मुसाफिर सब—
होशियार हो जाओ अब—
६----(सीटी)
१----कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ भक् भक्।
(चल देती है।
२----गड़ - गड़ चली हमारी गाड़ी,
कैसा जंगल! कैसी झाड़ी!
३----घनी घाटियाँ, नदियाँ नाना,
अंग देश है यही पुराना;
बाबा बैजनाथ महराज----
इसी देश में रहे बिराज।
४----रहते यहाँ कोल संथाल,
जिनकी निपट निराली चाल;
कसे लँगोटी, काले - काले,
जंगल में हैं डेरे डाले।

५—बालक, बुड्ढे और जवान
रखते हैं सब तीर-कमान।

२—मधुपुर छोड़ा, हुए रवाना,
रानीगंज अभी है आना;
जहाँ खुदी है धरती सारी,
खान कोयले की है भारी।

८—(लाल झंडी)

२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो, रोको चाल!

(रुक जाती है।)

रानीगंज यही इस्टेशन,
यहाँ इकट्ठे हैं कितने जन!

१—यहाँ पेट में पानी भर लूँ,
और कोयला भी कुछ धर लूँ।

७—(घंटी)

८—घंटी हुई, मुसाफ़िर सब—
होशियार हो जाओ अब।

६—(सीटी)

—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।
(चल देती है

२----शुरू यहाँ से है बंगाल,
यह सूबा है बड़ा विशाल।
३----और बहुत ही है रमणीक,
४—तुमने कहा बहुत ही ठीक।
८—(लाल झंडी)
२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो, रोको चाल।
(रुक जाती है।)
२—वर्द्धमान इस्टेशन आया,
'सीताभोग' यहाँ का खाया।
७—(घंटी)
८—-घंटी हुई मुसाफ़िर सब—
होशियार हो जाओ अब।
६—(सीटी)
१—कू ऊ ऊ ऊ, छक् छक् छक् छक्,
कलकत्ते को जाती हूँ, भक् भक्।
(चल देती है।)

२—बंग देश की छटा निराली,
देखो कैसी है हरियाली!
सुजला, सुफला भूमि यहाँ की,
ऐसी सुन्दर और कहाँ की?
जा सकती है नजर जहाँ तक,
हरे दीखते खेत वहाँ तक।
६----बीच-बीच में वन हैं छोटे,
जिनमें ताल वृक्ष हैं मोटे।
४----छोटे - छोटे गाँव मनोहर,
जिनमें हैं छोटे - छोटे घर;
घर-घर के पिछवाड़े आली,
एक तलैया है जलवाली।
५—कहती हो तुम जिसे तलैया,
उसको ये बंगाली भैया—
'सुन्दर पुष्करिणी' हैं कहते,
जिसमें कच्छ-मच्छ हैं रहते।
३—अरे, अरे, ये भर-भर डलियाँ
लिए जा रहे लोग मछलियाँ!
२—यहाँ मछलियाँ सब खाते हैं,
३—बंगाली जो कहलाते हैं।

८----(लाल झंडी)

२—देखो, देखो, झंडी लाल,
ठहरो, ठहरो, रोको चाल।

१—कू ऊ ऊ ऊ, गड़ड़ड़गम,
कलकत्ते आ पहुँचीं हम।

(रुक जाती है।)

८----लाओ टिकट, खतम है खेल,
कलकत्ते आ पहुँची मेल।

८—हरी झंडी दिखाती हुई आगे-आगे चलती है।
७—उसके पीछे घंटी बजाती हुई चलती है।

१ से ६ तक—पहली पाँच पीछे-पीछे भक्-भक् करती और नं० ६ सीटी बजाती हुई चक्कर से घूमकर बाहर नि जाती है।

लोरी

देखो संझा आई काली,
पूरब - पच्छिम छाई लाली।
झाँझें बजतीं झन् झन् झन्,
घंटा बोले टन् टन् टन्।

सूरज डूबे पच्छिम-ओर ;
चंद हुआ चिड़ियों का शोर ।
दिया जलाओ हुआ अँधेरा ;
चिड़ियों ने भी लिया बसेरा ।
छिटकीं भर आकास तरैयाँ ;
सब बच्चों की लेंय बलैयाँ ।

चंदा मामा छिप-छिप आते ;
सब बच्चों को पास बुलाते ।
सो जा लल्ला, सो जा प्यारे !
सो जा मेरे राजदुलारे !
आरी निंदिया, दौड़ी-दौड़ी ;
खाट बिछाई लंबी चौड़ी ।

आरी निंदिया, तू आ जा ;
लल्ला को तुरत सुला जा ।
नींद कहे, मैं आऊँगी ;
साथ खिलौने लाऊँगी ।

लाई हूँ मैं सँग में सपने,
सारे खेल दिखाऊँ अपने ।
आँख मूँदकर सोया लल्ला ;
आरी निंदिया, मत कर हल्ला ।

नींद कहे, मैं आती हूँ,
सारे खेल दिखाती हूँ।

सोने और चाँदी की छड़ियाँ

दृश्य १

स्थान—घना जंगल

(राजकुमार हाथ में धनुष-बाण लिये आता है, पीठ पर
और कमर में तलवार)

राजकुमार—(चारो ओर देखकर डरता हुआ ।)

अरे ! किधर मैं आया, राह भूल पछताय
संगी - साथी, घोड़े, वाहन, हाथ

हिरन किधर यह धाया, हाथ न मेरे आय
मैं हो गया अकेला, कैसा विकट झमेल
बड़ा घना जंगल है, किया किसी ने छल है
मैं हूँ अतिशय प्यासा, प्राणों की क्या आश
जल का पता न पाऊँ, कहाँ किधर अब जाऊँ

(कुछ झुककर जंगल में इधर-उधर देखता है।)

नया सन्नाटा छाया ! कैसी है यह माया !
कहाँ अकेला जाऊँ ? कैसे प्राण बचाऊँ ?

(फिर जंगल के भीतर बढ़ता हुआ झाँकता है।)

हैं ! यह किसका भाई, पड़े महल दिखलाई !

(आगे बढ़ता है, परदा उठ जाता है। सामने एक महल का फाटक देख पड़ता। है)

वन में महल निराला ! और नहीं रखवाला !
कोई कहीं न दिखता— आता चलता-फिरता।
भीतर जाऊँ, न जाऊँ ? कैसे मन समझाऊँ ?

(कुछ सोचकर)

होना है सो होगा— लिखा सभी ने भोगा।
चला, घुसा भीतर में, सुबह चलूँगा घर में।

(फाटक के भीतर घुसता है। परदा उठ जाता और बड़ा भारी महल दिखाई पड़ता है। सामने एक पलंग पर एक कन्या सोती दिखाई देती है।)

(अरे !)

इतना है यह सुन्दर ! बाहर - जैसा भीतर।
सज-धज इसकी ऐसी, राजपुरी की जैसी !

(पर)

क्यों सन्नाटा मारी ? कोठी सूनी सार

(पलंग देखकर चौंक पड़ता है)

अरे, अरे, यह कौन ? पड़ी पलँग पर मौ

कितनी सुन्दर कन्या ! तीन लोक में धन्य

किसी देश की प्यारी---- है यह राजकुमारि

(पास जाकर)

अजी, कौन तुम सोती ? हँसती और न रोती

पाहुन भूखा - प्यासा, खड़ा लगाए आशा

(आश्चर्य से)

अरे, नहीं यह जगती, शंका मन में उठती

(छूकर—अरे !)

यह तो मरी पड़ी है, कैसी बुरी घड़ी है

(फिर पास रक्खी हुई सोने और चाँदी की दो छड़ियाँ देख अचरज से)

पास पड़ी ये क्या हैं ? सुन्दर दो छड़ियाँ हैं

(छड़ियों को उठाकर)

यह चाँदी, वह कंचन, कौन भेद है भगवन्

देखूँ इन्हें छुआकर, होता है क्या अंतर

चाँदी और सोने की छड़िया बारी-बारी से कन्या को छुआता है।
सोने की छड़ी से कन्या जगकर अचरज से इधर-उधर देखती
है । राजकुमार परदे की आड़ में छिप जाता है ।)



कन्या जागकर इधर-उधर देखती है ।

राज़कुमार (मन में)
ड़ी देह लगते ही, चौंकी यह उठते ही ।

कन्या (राजकुमार को देखकर)—

कौन यहाँ आ पैठा, राकसपुर में ऐंठ

राजकुमार (आगे बढ़कर)—

राकसपुर यह कैसा ?

कन्या—

जैसा कहती, वैसा ।

अरे ! आदमी भाग, क्यों छूता है आग
राकस गए विचरने, क्यों आया है मरने
तुझको खा जावेंगे, दया न चित लावेंगे

राजकुमार—

हाय, करूँ अब क्या मैं ! आकर कहाँ फँसा मैं

कन्या—

मैं हूँ राजकुमारी, है यह पुरी हमारी
मात-पिता जन सारे, राकस-गन ने मारे
गाय, बैल, हय, हाथी, जितने घर के साथी
सबको हड़प लिया है, मुझको छोड़ दिया है
चाँदी-छड़ी छुआकर, सुध मेरी लेते हर
कंचन-छड़ी छुआते, हैं फिर मुझे जगाते
सोना मुझे छुआया, तुमने वृथा जगाया
सुबह सभी आवेंगे, तुमको खा जावेंगे

दु:ख स्वयं मैं पाऊँ, कैसे तुम्हें बचाऊँ !
चाँदी-छड़ी छुआ दो, मुझको तुरत सुला दो।
छिप जाओ उस ओर, करो विलम्ब न और।

राजकुमार—

हाय, हाय, भगवान् ! क्या न बचेंगे प्राण ?

कन्या—

इतना मत घबराओ, छिपकर प्राण बचाओ।

राजकुमार—

अच्छा, तो सो जाओ।

कन्या—

तुम भी प्राण बचाओ।

(चाँदी की छड़ी छुआता है। राजकुमारी तुरत सो जाती है। राजकुमार छिप जाता है।)

परदा गिरता है।

दृश्य २

जंगल

(राक्षसी-नाच। राक्षस लोग नाचते, गाते, उछलते, कूदते जाते दिखाई पड़ते हैं, विकट मूर्तियाँ, भयानक भेस)

पहला राक्षस—

रात बिताई बड़े मजे में, खाया मैंने भैंसा।

दूसरा राक्षस—

चार गधे, दो सूअर खाए, पेट भरा है ऐस

(अपने फूले हुए पेट पर हाथ फेरकर डकार लेता
और उछलता-कूदता है ।)

तीसरा राक्षस—

हाथी का सिर मैंने खाया, एक टाँग, दो कान

एक राक्षसी—

चिमगादड़ चाम चबाऊँ, लो इनको पहचान

(दोनो हाथों में दो चिमगादड़ दिखाता है । 'मुझ
भी दो, मुझको भी दो' कहकर सब राक्षस लेने
को दौड़ते हैं । राक्षसी भाग जाती है, सब
उसके पीछे कूदते-फाँदते जाते हैं ।)

(परदा उठता है, राजकन्या पलंग पर पड़ी है, राक्षस-
गण हुल्लड़ मचाते प्रवेश करते हैं ।)

एक राक्षस—

खाऊँ, खाऊँ, पाऊँ, पाऊँ, मनुज-गंध मैं प

(इधर-उधर सूँघता है ।)

दूसरा राक्षस—

मानुस के मैं हाड़ चबाऊँ, लहू चूस पी जाऊँ

(इधर-उधर सूँघता है ।)

राक्षसी—

आया कोई इधर मनुज है, बास उसी की आती

तीसरा राक्षस—

चलो राज-कन्या से पूछें, वह क्या बात बताती ?

(राजकुमारी के पास जाकर सोने की छड़ी छुआता है। कुमारी जाग पड़ती है।)

तीसरा राक्षस—

रज्जो बेटी, आज कहाँ से मानुस की बू आवे ?

कन्या—

मैं मानुस, खा जा तू मुझको, जो तुझको यह भावे !

राक्षसी—

यह क्या कहती रज्जो बेटी ! मैं तुझ पर बलिहारी !
आँखों की पुतली तू मेरी, और प्राणों से प्यारी !
चल, जाने दे, नहीं बताती, मैं भी हठ न करूँगी।
जो भावे तुझको, सो कर तू, मैं कुछ भी न कहूँगी।
संकट, विकट सुनो जी राकस, जाने भी दो आज।
कल हम मारेंगे मानुस की, भारी एक समाज।
गुल-गुल, नरम देहवाले, औ' तोंदल मोटे पेट।
पटक, पछाड़, फाड़कर छाती, पिएँ खून भर पेट।
भूँज आग में या कच्चा ही, चाटेंगी कर मौज।
चख-चख मजा मगन होवेगी, मेरी राकस - फौज।

जाओ सब, कल सुबह चलेंगे, करो आज आरा
मैं लाली को खिला-पिला लूँ, फिर लूँगी विश्रा
(राक्षसों का दल जाता है, राक्षसी राजकुमारी से कहती
तेरी प्यारी सूरत न्यारी, मेरे मन में है भा
ले लाली अति लाड़ लड़ीली, मधुर मिठाई ला
तू तो बेटी मांस न खावे, स्वाद न जाने इसक
इससे आज मलाई लाई, स्वाद भला है जिसक
खाले, पीले बड़े मज़े से, मुझसे कुछ बतिया ले
होती सुबह चलूँ मैं सोऊँ, तू भी अब निदिया ले

(राजकुमारी कुछ खा-पीकर लेट जाती है। राक्षसी हाथ में चाँदी की छड़ी लेकर कुमारी के शरीर से छुआती और कहती है।)

जादू-छड़ी छुआ सोने की चाहूँ जभी जगाऊँ
रज्जो बेटी! अब तू सो जा चाँदी छड़ी छुआऊँ

(कुमारी को सुलाकर राक्षसी बाहर जाती है। परदा उठता है। तहखाने में राजकुमार बैठा है।)

राजकुमार (घबराया हुआ)

दृश्य भयानक कैसा, कभी न देखा ऐसा
प्रेत - सरीखे काले, बड़े दाँत - मुँह वाले

खूनी आँखें कैसी, लोहू पीतीं जैसी।
कन्या जो न बचाती, आज जान ही जाती।
बुरा फँसा हूँ भाई, जतन न पड़े दिखाई।
चाहे जो सुकुमारी, बचे जान यह प्यारी।
राकस जब हट जावें, हम भी छड़ी छुआवें।
उसके प्राण बचाऊँ, सँग लेकर भग जाऊँ।
राकस करैं जो धावा, कैसे देऊँ भुलावा।

(हाथ पर माथा रखकर सोचता है। फिर
धीरज के साथ कहता है।)

बात ध्यान में आई, राह एक यह पाई।
लगै जभी दिन ढलने, राक्षस जाँय विचरने।
तब मैं कुँवरि जगाऊँ, एक उपाय बताऊँ।
राक्षस-दल की रानी, है यह बुढ़िया नानी।
कन्या को वह माने, प्राणों के सम जाने।
जो कुछ कुँवरि कहैगी, बुढ़िया वही करैगी।
जो कन्या अड़ जावे, असुर-नाश विधि पावे।
मैं सोई विधि पाऊँ, राकस-वंश नसाऊँ।
सूर्य घटा आ छाई, धूप बहुत चढ़ आई।
अब चल कुँवरि जगाऊँ, उनकी राय मिलाऊँ।

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य ३

राजकुमारी के कमरे के सामने बग़ीचे में फूल खिले फौआरा छूट रहा है और हरियाली छाई है। ऊपर आकाश से अप्सरा बीन बजाती और गाती हुई बाग में उतरती और हार्मोनियम से सुर मिलाती है। नेपथ्य में हार्मोनियम बजता है।)

गीत

बीती रात, उषा आई है, नभ में लाली छाई
चिड़ियों ने है चहक-चहक कर मधुर भैरवी गाई
खिलीं अधखिली कलियाँ, फूलों में बहार है आई
मधु-लोभी भौंरे उड़ते हैं, तितली भी मनभाई
दुख की रात गई अब, आता दिन देखो, सुखदाई
जगो कुमारी सुकुमारी अति, मैं आशिष हूँ लाई

अप्सरा—

है जग मसान-सा, जहाँ न माता होती
इस मृत्युलोक में मा है जीवन-ज्योति
सब स्नेह सगों का जहाँ चला जाता है
रहती सुरपुर में प्रेम-भरी माता है
खा ली असुरों ने राजपुरी यह सारी
सुरपुर रानी को हुआ बहुत सुखकारी

माता का प्रेम किन्तु वहाँ अकुलाया,
पुत्री-हित व्याकुल हुआ, मुझे भिजवाया।
"जा, युक्ति मुक्ति की बेटी को सिखला आ,
सपने में उसको सब बातें बतला आ।
है इसी भवन में राजकुँवर जो आया,
वह नाशेगा सब राकस-दल की माया।
बस राजकुँवर-संग देश उसी के जा तू,
कर ब्याह उसी से आजीवन सुख पा तू।"
अब राकस-माया से मैं इन्हें बचाऊँ,
इन कुँवरि-कुमारी की जोड़ी मिलवाऊँ।
कन्या को सपने में सलाह बतलाऊँ,
सेवा करके इसकी मैं भी सुख पाऊँ।

(खुली हुई खिड़की के द्वारा राजकुमारी के कमरे में जाती है। परदा उठता है। राजकुमारी पलंग पर बेहोश लेटी है, अप्सरा सिरहाने बैठ जाती और कहती है।)

अप्सरा—

मा तेरी है स्वर्ग में, पर मन तेरे पास,
तेरी रक्षा के लिये करती सदा प्रयास।
सखी उसी की स्वर्ग से लाई मैं संदेश—
प्राण बचा अपने तुरत, त्याग त्याज्य यह देश।

राक्षस-प्राण-विनाश-विधि, चतुराई से जान
राजकुँवर से फिर उसे, कर तू आज बखान
कुँवर-संग तू जा चली, उनके पिता उदार
तेरे योग्य सुवर यही, सुंदर राजकुमार
सुखी तुझे लख स्वर्ग में, माता भी सुख पाय
वचन हमारा चित्त धर, अवसर चला न जाय

(अप्सरा जाती और राजकुमार आता है।)

राजकुमार—

मनो कमल है जल में खिलता—
शय्या पर यह जरा न हिलता।
राक्षस की क्या अद्भुत माया,
जीते को कर मृतक सुलाया !
जो मैं अभी न इसे जगाऊँ,
तो कैसे निज प्राण बचाऊँ !
इसे जगाकर युक्ति बताऊँ,
जो बच जाऊँ, ईश मनाऊँ।

(कुमारी को सोने की छड़ी छुआता और हटकर आड़ में खड़ा हो जाता है। कुमारी उठ बैठती और इधर-उधर देखकर कहती है।)

राजकुमारी—

रोज़ रात को बेसुध सोती, आज हुआ यह कैसे

देवलोक ही दीख पड़ा था, सपना अद्‌भुत ऐसा !
माता मेरी स्वर्गलोक से, सखी भेज सिखलाती ;
मेरे दुख से दुखी रात - दिन, अब भी वह दुख पाती ।
पर वह था सपना, या सच ही ? सुरभित सभी मही है ;
देवी की वह मधुर मूर्ति नयनों में नाच रही है ।
कुछ भी हो, मैं वही करूँगी जैसा देखा सपना ;
कहना मानूँगी माता का, होगा हित ही अपना ।
पूर्व-जन्म का हितू रहा है राजकुमार हमारा ;
बस पाऊँगी छुटकारा मैं अब उसके ही द्वारा ।

(राजकुमार आगे बढ़ता है । राजकुमारी उठ खड़ी होती और कहती है ।)

आए भली घड़ी तुम प्यारे ! लो यह, कुछ जल-पान करो ;
आगे जो मैं कहती हूँ कुछ, धीर-वीर सम ध्यान धरो ।
राकसपुर में बैठे हो तुम, व्याकुल भारी मेरा मन ;
रात बचे, पर आगे कैसे, होगी रक्षा जीवन-धन !

राजकुमार—

एक सलाह कहूँगा तुमसे, जो तुमसे बन आवे ;
हम दोनों बच जायँ और यह राकस - दल बिनसावे ।
बुड्ढी तुमको बहुत चाहती, उससे पूछ सुजान ;
राकस - प्रान - नाश हो जिससे, वह विधि लेना जान ।

वही उपाय करूँ मैं भी, बस सभी बात बन जा
यम-किंकर-से विकट राकसों का दल यह बिनसा
खाना-पीना सब तज देना, जब तक नहीं बता
सुबह मिलेंगे, अब सो जाओ, राकस-दल अब आ

(राजकुमारी को चाँदी की छड़ी छुआकर सुलाता और अ
बाहर जाता है। कुछ देर पीछे गुलगपाड़ा मचाती
हुई राक्षसी सेना आती और जानवर तथा
आदमियों की लाशें पटकती है ।)

१ राक्षस—

मारे मानुस, बहुत मजे का ढेरों मांस तया

२ राक्षस—

पाँच-सात जंगल के राकस न्योत करो जेवना

३ राक्षस—

हो हो हो हो—हा हा हा हा खूब किया आखे

४ राक्षस—

खून पिएँ, चरबी भी चाटें, खायँ मांस भरपे

राक्षसी—

ठीक कहा तुम लोगों ने है, न्योता तो दे आओ
बुला-बुलाकर दूर - दूर के राकस खूब खिलाओ

१ राक्षस—

मैं जाता हूँ, सबको लेकर बढ़िया मांस पकाऊँ
कूट-पीसकर भूँज-भाँजकर खरा कबाब बनाऊँ

२ राक्षस—

मैं दस - बीस संग ले साथी, न्योता देने जाऊँ।

३ राक्षस—

नाच - कूद, रस - रंग मचाने का सामान जमाऊँ।

४ राक्षस—

गुरदा, तिल्ली, पित्त, फेफड़े की चट चाट बनाऊँ।

५ राक्षस—

बाघ, सिंह, गैंड़े, हाथी की खींचूँ खाल, बिछाऊँ।

(सब राक्षस उछलते-कूदते हुए नाचते-गाते हैं।)

वाह - वाह ! क्या मौज मिली है, जलसा भारी आज,
ऊधम कर धम - धम नाचेगी सब राकसी समाज।

(तीर-धनुष लेकर सब उद्दंड नाचते और गाते हैं।)

ही ही ही ही—हू हू हू हू बड़ी खुशी है भारी,
तीर - धनुष, गदका ले नाचो, भारी करो तयारी।

(सब जाते हैं। इधर राक्षसी कुमारी को जगाती है।)

राक्षसी—

लल्ली बेटी, आज खुशी है, होगा जलसा भारी,
बीस - पचास कोस के राकस अभी आयँगे प्यारी !
तरह - तरह का मांस पकेगा, होंगे स्वाद अनेक,
मुझको दुख है एक यही बस, खाय न तू तो नेक।
अति अनमोल मिठाई लाई, खा तू बेटी मेरी।

(कुमारी मिठाई नहीं लेती और सिसककर रोती है ।

राक्षसी—

हैं-हैं यह क्या है ! क्यों बेटी, कौन हुआ दुख तुझको

बता- बता सब मुझे, करूँगी, क्या मुश्किल है मुझको

(कुमारी फूट-फूटकर रोने लगती है ।)

अरे ! हाय ! यह कौन मुसीबत लाली, तुझ पर आई

जो तू कहे, करूँगी सो मैं, होगा सब सुखदाई

मत रो, मत रो, मेरी मुन्नी ! मैना ! सुग्गी ! प्यारी

नयनों की पुतली तू मेरी और हृदय - उजियारी

(कुमारी को बड़े प्रेम से छाती से लगाकर आँसू पोछती है ।

बता-बता, तू क्या कहती है ? कैसे दुखड़ा टालूँ

तेरा दुश्मन कौन कि जिसका शीश काट मैं डालूँ

(कुमारी सुबकियाँ भरती हुई कहती है ।)

कुमारी—

अम्मा, तू तो रोज़ सुला जाती मुझको असहाय

रहूँ अकेली पड़ी, कहीं जो शेर मुझे खा जाय

अम्मा, तू जब तक जीती है, मेरी है रखवारी

तेरे मर जाने पर राकस बहुत करेंगे ख्वारी

राक्षसी (विकराल हँसी हँसकर)—

तू बेटी, डरपोक बहुत है, इसीलिये भय खावे

राकस - सिंह कौन ऐसा, जो तुझ पर हाथ चलावे

साठ ज़िले जंगल की रानी मैं राकस - सरताज ;
मेरे बल पर आज सभी के चलते सारे काज।
मेरे मरने की शंका तो ज़रा न मन में ला तू ;
मेरे कुल को, राकस-दल को, अमर मान सुख पा तू।

कुमारी (प्रसन्न मुद्रा में)—

हाँ अम्माँ ! जो ऐसा है, तो डर हट गया हमारा ;
राकस सभी अमर होते हैं, मैंने नहीं बिचारा।
अमर देवता ही होते हैं, यही सुना है मैंने ;
राकस अमर हुए हैं कैसे, नहीं गुना है मैंने।
मैं बेटी, तू अम्मा मेरी, दिल से तब मैं मानूँ ;
जब यह कथा बता दे मुझको, स्नेह सत्य ही जानूँ।

राक्षसी—

ना बेटी , मत हठ कर इस पर, इसका कठिन बताना ;

कुमारी—

बस बातों का नेह तुम्हारा मैंने भी पहचाना।
मैं मर जाती, तो अच्छा था, सब काँटा मिट जाता ;
इस जीने में कौन धरा सुख, खान - पान न सुहाता !

(फूट-फूटकर रोती है।)

राक्षसी—

अरी ! हठीली, भोली, रो मत, कहना नहीं किसी से ,
प्राण हमारे बंद झील में, राकस अमर इसी से।

कुमारी (रोती हुई)—

प्राण झील में कैसे रहते, यह तो मुझे बता
नहीं, करूँ उपवास, मरूँ, जो मुझसे भेद छिपाओ

राक्षसी—

मेरी लाली, मेरी है तू, इससे तुझे बताऊ
कोई और कभी पूछे, तो गर्दन दाब चबाऊ
ख़बरदार ! मत कहे किसी से, गुप्त भेद यह भारी
वन में झील, झील के भीतर गुफा एक है प्यारी
उसी गुफा में स्वर्ण - पिटारा, जिसके अंदर फल है
फल - भीतर भौंरा बसता है, वही प्राण का स्थल है

कुमारी (राक्षसी के गले लिपट और हँसकर)—

अब मैं जान गई अम्मा, अब मुझको डर न सतावे
जुग-जुग जियो असुर-रानी, यह बेटी कुँवरि कहावे

राक्षसी—

आज 'स्वामिनी हूँ मैं कैसी' तुझको यह दिखलाऊँ
अमर राक्षसी बन तू कैसे, यह भी मैं बतलाऊँ

कुमारी (हँसकर)—

तब तो फिर मेरे मन की है बात सभी बन आ
राकस - राजकुमारी मैं हूँ, तू रानी मन भा

क्षसी—

ाकस - पाँति बहुत बटुरेगी, कहीं न ठौर मिलेगा ;
ंगल में ज्योनार सजेगी, मदिरा - मांस उड़ेगा।
ं जाकर सब काम सँभालूँ ; खाना अब तो खा तू ;
प्राधी रात गए दस राकस भेजूँ, सँग में आ तू।

मारी—

प्रच्छा अम्मा, अब तुम जाओ, मैं खाना खाती हूँ।
तो राकस भेजोगी, संग उनके शीघ्र ही आती हूँ।

(राक्षसी जाती है। कुछ देर तक भड़-भड़ की आवाज़ होती है, मानो बहुत-से लोग माल-असबाब लेकर महल के बाहर जाते हैं। फिर सन्नाटा छा जाता और राजकुमार कुमारी के पास आता है।)

ाजकुमार—

वाह! कुमारी, तुमने तो है खेल दिखाया खासा ;
खूब भेद बतलाया मुझको, बुड्ढी को दे झाँसा।
बात सभी छिपकर सुन ली है, चलकर युक्ति करूँ मैं ;
राकस मग्न मांस - मदिरा में ; कारण कौन, डरूँ मैं ?

कुमारी—

खूब सावधानी, कुमारजी, रखकर करना काम ;
नहीं हमारा ही हो जावेगा बस काम तमाम।

राजकुमार—

दिल में मत घबराओ, रक्खूँगा मैं पाँव छिपा
हो भगवान सहायक मेरे, मारूँ सभी निशा

(बाहर जाता है। कुछ देर सन्नाटा रहने के बाद बड़ा हुल्लड़ सुनाई पड़ता है। राक्षसों का गरजना, चीखन तड़पना, धमाके से गिरना आदि आवाजें नेपथ्य से आती हैं।)



(बूढ़ी राक्षसी और दो-चार राक्षस कमरे के दरवाजे तक जा हाय-हाय करते, पछाड़ खाकर गिरते हैं। बूढ़ी राक्षसी दूर से गरजती-चीखती कहती आती है।)

"बेटी, बेटी ! तेरे जी में क्या यही बसा था ?
बेटी, हाय ! निर्वंश कर दिया इस समाज का !
मुझे भी तूने मार दिया !

(दरवाजे तक आकर पछाड़ खाकर गिरती और तड़प-तड़पकर मर जाती है। कुमार आता है।)

राजकुमार (कुमारी को देखकर ढाढ़स बँधाकर)—

है यह दया तुम्हारी, मिली मुझे सुकुमारी।
राक्षस सारे मारे, तुमने हे असुरारे !
पहुँचा झील-किनारे, डुबकी मार गया रे।
मिली सुवर्ण-पिटारी, फल-भौंरे से भारी।
तट पर ढक्कन खोला, फल को चीर निकाला।
मिला मधुर जो काला, उसे कुचल झट डाला।
दुसह दर्द के मारे, गरजे राक्षस सारे।
मानो बिजली कड़की, बड़े वेग से भड़की।
तलफ-तलफ कर सारे, गिरे बीच बेचारे।
दौड़ मची सब ओर, घटा घिरी घनघोर।
कितने झील-किनारे, दौड़े खोजन-हारे।
जो मुझको धर पाते, तुरत फाड़ खा जाते।
ऊँचे तरु पर चढ़कर, रहा वहीं लुक-छिप कर।
जब न किसी को पाया, चुपके से भग आया।

राकस मरे तमाम, पूर्ण हो गया क
पूरब में उजियाला, सूर्य निकलने वा

प्राण-दान तुमने दिया, चलो हमारे संग;
मातु-पिता सब हों सुखी, छावे नई उमंग।

कुमारी—

तुव साहस, दृढ़ता, चतुराई,
बस मेरे मन को है भाई।
सखा, सुहृद, अवलंब हमारे,
सुखी रहो नयनों के तारे।
आज्ञा है माता की प्यारे!
चलो, चलूँ मैं संग तुम्हारे।

(दोनो एक-दूसरे के गले में बाहें डालकर बाहर जाते हैं
स्वर्ग से फूल बरसते, बाजे बजते और
शंख-ध्वनि होती है।)

पट्टाक्षेप

वीरबाला

(लड़कियों का मनोरंजक खेल)

(१२ कन्याओं को एक पाँति में रखिए। आगे चलकर उनमें से चार-चार की तीन पाँतियाँ आगे-पीछे हो जायँगी। एक सरदार बनकर अलग खड़ी-खड़ी बोलेगी। पोशाक—वीरबाला की-सी लंग लगाकर धोती, कमर कसे, वेणी लटकती, हाथ में धनुष-बाण, पीठ पर ढाल, कमर में तलवार, कपड़े सब पीले रंग के।)

(१३हों एक पाँति में खड़ी होकर सम स्वर से)

(१)

सावधान ! सावधान !!
कर में लेकर तीर-कमान—

भारत जननी आगे आतीं,
ध्यान धरो भारत-संतान !

पूजो हमको तुम सब लोग,
चूको मत यह शुभ संयोग।

हम सबका आदर करने से—
जग में पाओ सुख-सम्मान।

(सरदार कन्या का भाषण कुछ अलग खड़े होकर)

(२)

सीधी बाँधो एक कतार,
बढ़ती आओ अब की बार।
पाँति बाँधकर खड़ी रहो सब,
सावधान हो धरो कृपाण।
सीधी खड़ी रहो सब कोय,
पग से पग भी मिलता होय।
हाथ दाहने धरो धनुष को,
बाएँ कर में ले लो बाण।

(३)

पाँव दाहना प्रथम उठाकर,
आगे बढ़ना पाँव मिलाकर।
पाँति किसी की टूट न जावे,
हिले नहीं कर तीर-कमान।
बढ़ती जाओ, बढ़ती जाओ,
ठहरो, 'हाल्ट' हुक्म जब पाओ।
बाएँ को मुड़ जाओ स्यानी,
पाँति न टूटे, रखना ध्यान।

(सावधानी से घूमकर पाँति बदलेंगी)

(४)

फिर आगे को बढ़ती जाओ,
'हाल्ट' हुक्म पर सब रुक जाओ।
पहली पाँती घुटने टेको,
हाथ धरो सब तीर-कमान।
उर में करें घाव गंभीर—
मारो ऐसे तीखे तीर।
छिद जावे दुश्मन की देह,
हाथ धरो फिर पैने बान।

(५)

खड़ी रहो होकर तैयार,
बाएँ घूमो अब की बार।
एक पाँति में फिर वैसे ही
हो जाओ झट, सभी समान।

(पाँति तोड़ने में भभ्भड़ न हो। एक-एक पाँति एकसाथ हटे)

गाओ गीत, करो सब प्रीति,
मन में मत रक्खो कुछ भीति।
भारत माता की जय बोलो,
मिलकर करो सभी जय-गान।

सब लड़कियाँ—भारत माता की जय !

भारत माता की जय !!

(सब लड़कियाँ—एक लाइन में खड़ी होकर सम स्व

(६)

कौशल्या - कुंती - सम धन्य,
हुईं नारियाँ यहाँ अनन्य ।
सबने जाये वीर पूत थे,
रक्खा था भारत का मान ।
धर्म - कर्म के वीर वरिष्ठ,
विमल-चरित वे व्यास-वशिष्ठ ।
भारत की कन्याओं ही ने
उपजाए थे, रखना ध्यान ।

(७)

भारत - कन्याएँ हम सर्व—
रखती हैं अब भी वह गर्व,
वीर - सुता, हम वीर अंगना,
वीर - जननि हों, हे भगवान् !
देकर हमको शिक्षा - दान,
हरो हमारा सब अज्ञान ।

देय तिथि	देय तिथि
18.2.78	
16.11.81	
18-9-82	
7.10.82	
14.10.82	
25.10.82	
18.1.83	
27.1.83	
4.3.83	